301hi04

4

मीराँबाई

आप रैदास तथा तुलसीदास की कविताओं का आस्वादन कर चुके हैं। भक्तिकाव्य की इस रसधारा में विशिष्ट नारी व्यक्तित्व भी शामिल है, जिसका नाम है मीराँबाई। मीराँबाई श्री कृष्ण की अनन्य भक्त थीं, किंतु वे कृष्ण भक्ति के विभिन्न संप्रदायों में से किसी में भी विधिवत दीक्षित नहीं थीं। उनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' की भक्ति कही जाती है। माधुर्य भाव की भक्ति के अंतर्गत भक्त और भगवान में प्रेम का संबंध होता है। मीराँबाई श्री कृष्ण के प्रेम में डूबी हुई हैं। उन्हें वे प्रायः गिरधर, साँवरा या प्रीतम के नाम से पुकारती हैं। उनके समूचे काव्य में इस प्रेम की अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से हुई है। प्रेम के मिलन और विरह, दोनों ही पक्षों की सुंदर अभिव्यक्ति उनके काव्य में मिलती है। यह अभिव्यक्ति अत्यंत सीधे-सादे और सरल रूप में हुई है, जिसमें प्रेम, विश्वास और समर्पण की भावना विद्यमान है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पदों के सौंदर्य-स्थलों का उल्लेख कर सकेंगे;
- मीराँ के काव्य के भाव पक्ष पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- मीराँ की समर्पण भाव की भक्ति का स्पष्टीकरण कर सकेंगे;
- मीराँ की विरह-वेदना पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- मीराँ के जीवन के कटु अनुभवों का उल्लेख कर सकेंगे;
- मीराँ की काव्यात्मक अभिव्यक्ति पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

1. आपने मीराँ का कोई-न-कोई पद अवश्य ही पढ़ा अथवा सुना होगा। अपने पदों में मीराँ ने कृष्ण के अनेक नामों का प्रयोग किया है, ये नाम हैं –

टिप्पणी

गिरधर, गोविंद, साँवरा (श्याम), हरि, कृष्ण। इनके अतिरिक्त भी आपने कृष्ण के नाम पढ़े या सुने होंगे। उन्हें लिखिए –

....

....

....

2. जिससे आप प्रेम करते हैं,

(क) उसके संग अधिक-से-अधिक रहना चाहते हैं।

(ख) उसकी पसंद-नापसंद का विशेष ध्यान रखते हैं।

ऐसी और अनेक बातें हो सकती हैं, उन्हें यहाँ लिखिए –

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

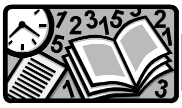

4.1 मूलपाठ

आइए, हम 'मीराँबाई की पदावली' से उद्धृत उनके कुछ पदों का आनंद लें :

पद

1. मैं गिरधर के घर जाऊँ।। टेक।।
गिरधर म्हाँरों साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ।
रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ।।

शब्दार्थ

गिरधर गिरिधर	– श्रीकृष्ण
म्हाँरो>म्हारो	– हमारे
हमारो	– हमारा
साँचो	– सच्चा
प्रीतम	– प्रियतम
रैण/रैन	– रात
भोर	– प्रातःकाल
रैणदिना	– रात-दिन
वाके	– उसके
ज्यूँ-त्यूँ	– किसी भी तरह से अर्थात् हर प्रकार से
वाहि	– उसे
पहिरावै	– पहनाए
सोई	– वही
उणकी	– उनकी
तितही	– वहीं

2. माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।
थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लियां बजन्ता ढोल।
थे कह्याँ मुंहाधो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल।
तण वारा म्हाँ जीवण वीराँ, वाराँ अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

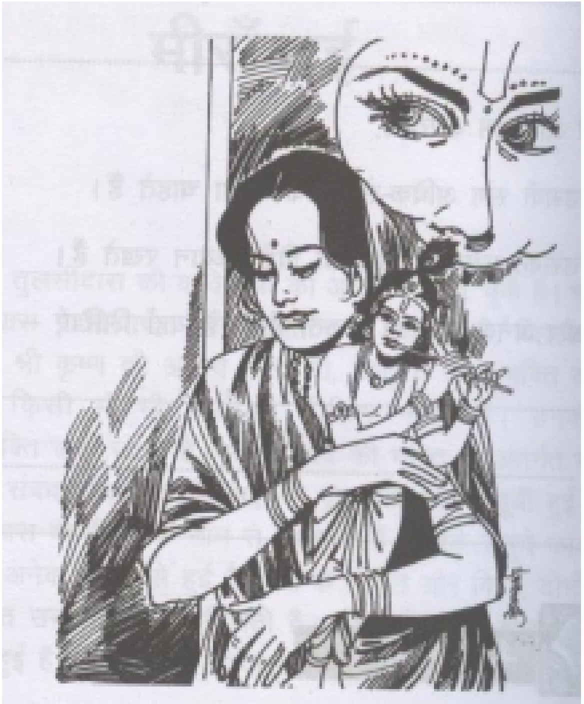

चित्र 4.1

3. सखी म्हारी नींद नसाणी हो।
पिय रो पंथ निहारत सब रैण बिहाणी हो।।टेक।।
सखियन सब मिल सीख दयाँ मण एक णा मानी हो।
बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मण रोस णा ठानी हो।
अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय बाणी हो।
अंतर वेदन बिरह री म्हारी पीड़ णा जाणी हो।
ज्यूँ चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो।।

शब्दार्थ

माई री	– ब्रज तथा राजस्थानी का एक सामान्य संबोधन (यहाँ हे सखी!)
म्हाँ	– मैं (ने)
थे	– तुम
कह्याँ	– कहती हो
छाणे	– छिपकर
म्हाँ काँ	– मैं कहती हूँ
चोड्डे	– चौड़े में अर्थात् खुले-आम
बजंता ढोल	– ढोल बजाकर, खुलेआम
मुंहाघो, मंहगो	– महँगा
सस्तो	– सस्ता
तराजाँ तोल	– तराजू में तोलकर
तण	– तन
वाराँ	– वारती हूँ, न्योछावर करती हूँ।
जीवण	– जीवन
अमोलक	– अमूल्य
मोल	– कीमत, दाम, मूल्य
मीरां कूं	– मीरा को
दरसण>दरसन	– दर्शन
दीज्याँ	– दीजिए
पूरब जणम	– पूर्व जन्म अर्थात् पिछला जन्म
कोल>कौल	– वचन
नसाणी	– नष्ट हो गई है
रो	– का
निहारत	– निहारते हुए अर्थात् देखते हुए
बिहानी	– बीत गई
दयां	– दी
बिन देख्याँ	– बिना देखे
कल ना पणाँ	– कल नहीं पड़ती अर्थात चैन नहीं मिलता
रोस>रोष	– क्रोध
अंग	– शरीर
खीण>क्षीण	– कमजोर, दुबला
व्याकुल भयाँ	– व्याकुल हो गई हूँ
बाणी	– बोली, आवाज़
अंतर वेदन	– हृदय की वेदना
पीड़ णा जाणी	– पीड़ा नहीं जानी
घणकूँ>घन को	– बादल को
रट	– रट लगाना
मछरी	– मछली
पाणी	– पानी
सुध बुध बिसराणी	– सुध-बुध खो बैठी है।

4.2 आइए समझें

पद - 1

प्रसंग

प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीराँ की अनन्य भक्ति तथा समर्पण भाव द ष्टिगोचर होता है। समर्पण भी भक्ति के नाना रूपों में से एक है। अपने आराध्य के इशारे पर उठने-बैठने, उसकी इच्छानुसार ही रहने तथा उस पर सर्वस्व न्योछावर कर देने के माध्यम से मीराँ ने इस समर्पण-भाव को व्यक्त किया है।

टिप्पणी

मैं गिरधर के घर जाऊँ।। टेक।।
गिरधर म्हाँरों साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ।
रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितहीं बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ।।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि मैं तो गिरधर के घर जाती हूँ, वही मेरा सच्चा प्रियतम है और मैं उसके रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हूँ अर्थात् कृष्ण के परम सौंदर्य ने मेरे मन में दर्शन का लोभ उत्पन्न कर दिया है, अतः मैं उसके प्रेम के वशीभूत होकर उसके घर जाती हूँ। रात होते ही मैं उसके घर जाने के लिए तत्पर हो जाती हूँ तथा प्रातःकाल होते ही वहाँ से उठ आती हूँ। मैं रात-दिन उसके साथ खेलती हूँ तथा हर प्रकार से उसे रिझाने तथा प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हूँ। अब वह मुझे जो भी पहनाए मैं वही पहनूँगी तथा जो कुछ खाने को दे, वही खा लूँगी। आशय है कि मैंने अपनी इच्छा-अनिच्छा, रुचि-अरुचि सभी से मुक्त होकर पूर्ण रूप से कृष्ण के प्रति समर्पण कर दिया है। मीराँ इसी भाव को और स्पष्ट करते हुए कहती हैं कि मेरी और उनकी (श्रीकृष्ण की) प्रीति पुरानी है और मैं उनके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। वह जहाँ चाहे मैं वहीं बैठ जाऊँगी और यदि वह मुझे बेचना भी चाहे तो मैं सहर्ष बिक जाऊँगी। मीराँ कहती हैं कि गिरधर नागर यानी श्रीकृष्ण मेरे स्वामी हैं तथा मैं बार-बार उन पर न्योछावर होती हूँ।

टिप्पणी

1. आपने महसूस किया होगा कि इस पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीराँ की समर्पण-भावना व्यक्त हुई है। समर्पण प्रेम और भक्ति का अनिवार्य अंग है। समर्पण का अर्थ है– अपनी इच्छा-अनिच्छा, रुचि-अरुचि, मान-अपमान आदि से मुक्त हो प्रिय या आराध्य के आदेश या इच्छा के अनुसार व्यवहार करना अर्थात् 'स्व' या 'मैं' की भावना से छुटकारा पाना। जब प्रेमी या भक्त 'मैं' की भावना से छूट जाता है तो उसकी आत्मा निर्मल हो जाती है। माया और मोह इस 'मैं' की भावना का ही परिणाम है, इससे मुक्त व्यक्ति ही सच्चे आनंद की प्राप्ति करता है। आत्मबद्धता में इस निर्मल आनंद की प्राप्ति नहीं होती। कबीर ने भी कहा है–

   जब मैं था तब हरि नहिं, अब हरि है मैं नाहिं।

2. 'समर्पण-भाव' मीराँ के अन्य पदों में भी अत्यंत मुखरता से व्यक्त हुआ है फिर भी इस पद की निम्नलिखित पंक्तियाँ विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं –

जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ।

3. आपने ध्यान दिया होगा कि प्रस्तुत पद में मीराँ ने कृष्ण को अपना सच्चा प्रियतम कहा है। प्रीतम के साथ ''साँचो'' विशेषण ध्यान देने योग्य है। प्रियतम स्वयं अतिशयवाचक अर्थात सर्वाधिक प्रिय है, फिर उसके साथ 'साँचो' क्यों? संभवतः मीराँ श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को लौकिक संबंध से अलग करने के लिए 'साँचो' प्रीतम कहती हैं। मीराँ के यहाँ अन्यत्र भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, कभी सच्चा प्रीतम तो कभी सच्ची प्रीत।

चित्र 4.2

(क) स्याम प्रीत रो बाँधि घूँघर्‌याँ, मोहण म्हारो साँच्याँ री।

(ख) अबिनासी सुँ बालवाँ है, जिन सूँ साँची प्रीत।

4. अगर आप मीराँ के और बहुत से पदों को पढ़ेंगे तो पाएँगे कि 'देखत रूप लुभाऊँ', यह अभिव्यक्ति मीराँ के पदों में बहुतायत से मिलती है। कृष्ण का मोहक रूप मीराँ को भा गया है। उसने नेत्रों के रास्ते मीराँ के हृदय में प्रवेश कर लिया है और अब उनका मन कृष्ण के रूप-सौंदर्य का दीवाना हो गया है। इसी भाव की पुनराव त्ति को देखते हुए कुछ विद्वानों ने मीराँ के प्रेम को 'प्रथम द ष्टिजन्य प्रेम' (लव एट फर्स्ट साइट) भी कहा है।

5. मीराँ के काव्य में कृष्ण को किसी भाँति रिझाने का भाव भी प्रमुखता से मिलता है, कुछ उदाहरण देखिए –

(क) *जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै, हो।*

6. *'मेरी उनकी प्रीत पुराणी',* इस भाव की अभिव्यक्ति भी मीराँ के काव्य में बार-बार होती है। एक उदाहरण और देखें –

पूरब जनम री प्रीत पुराणी, जाणा णा गिरधारी।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. मीराँ किसके घर जाने की बात कहती है?

(क) कृष्ण के (ग) अपनी माँ के
(ख) अपनी सहेली के (घ) अपने पति के

2. 'मेरी उनकी प्रीत पुराणी' में किन दो लोगों के बीच की प्रीति की बात कही गई है?

   (क) कृष्ण-राधा (ग) कृष्ण-मीराँ

   (ख) कृष्ण-रूक्मिणी (घ) राम-सीता

3. इस पद में मीराँ किसको बेचने की बात कहती है?

4. मीराँ किस समय कृष्ण के घर जाना चाहती है?

पद - 2

आइए दूसरे पद को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लें।

प्रसंग

प्रस्तुत पद में मीराँ ने कृष्ण के साथ अपने प्रेम संबंध की घोषणा अत्यंत साहस और द ढ़ता से की है। संभवतः राजवंश और लोक जीवन से मिलने वाली लांछना इस पद की भूमिका में है। यद्यपि यहाँ उसका बहुत स्पष्ट उल्लेख नहीं है, पर अन्यत्र ऐसा उल्लेख मिलता है। इस पद में इस साहसपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ कृष्ण से पूर्व जन्म के साथ का भी संकेत है।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि 'हे सखी ! मैंने तो श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है अर्थात् मैंने कृष्ण के साथ अपने संबंध का मूल्य भी चुकता किया है। तुम कहती हो कि मैं उनसे यह संबंध छिपकर रखती हूँ और मैं कहती हूँ कि मैंने खुले में ढोल बजा कर श्रीकृष्ण को मोल लिया है अर्थात् उन्हें खुले आम अपना लिया है। आशय है कि मुझे कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को गुप्त रखने की आवश्यकता नहीं है। मुझे उनसे प्रेम है और मैं सार्वजनिक तौर पर इस प्रेम की घोषणा करती हूँ। मीराँ आगे कहती हैं कि 'हे सखी, तुम कहती हो कि यह सौदा मँहगा है पर मेरा मानना है कि यह बहुत सस्ता है; क्योंकि मैंने यह सौदा तराजू पर तोलकर किया है अर्थात् मैंने पूर्ण रूप से सोच-विचार कर, जाँच-परख कर ही ऐसा किया है और इसका जो मूल्य मैंने चुकाया है (लोक अपवाद, कुल-संबंधियों से मिलने वाली भर्त्सना और लांछना आदि) वह तुम्हारी द ष्टि में अधिक हो सकता है, पर मेरी द ष्टि में श्रीकृष्ण को पाने के लाभ की तुलना में बहुत कम है। मैंने तो उन पर अपना तन-मन और जीवन सभी कुछ न्योछावर कर दिया है अर्थात् मैं अपने इस अमूल्य सौदे यानी श्रीकृष्ण से प्रेम संबंध पर स्वयं न्योछावर हूँ। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि मैंने अपना सब कुछ, जो अमूल्य था, कीमत के रूप में श्रीकृष्ण पर न्योछावर कर दिया। आगे, मीराँ पूर्व जन्म में दिए गए वचन का स्मरण कराते हुए श्रीकृष्ण से दर्शन देने की प्रार्थना करती हैं।

माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल।।टेक।।
थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लिया बजन्ता ढोल।
थे कह्यो मुंहाघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल।
तण वारा म्हाँ जीवण वीराँ, वाराँ अमोलक मोल।
मीरां कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

टिप्पणी

1. आइए इस पद की पहली पंक्ति *'माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल'*, पर विचार करें। इसका एक अर्थ यह भी लगाया जाता है – कि हे सखी! मैंने श्रीकृष्ण

को मोल ले लिया है और अब उन पर मेरा पूर्ण अधिकार है। किंतु यह अर्थ ग्रहण करने पर आगे की पंक्तियों से भाव का सामंजस्य नहीं बैठता। हालाँकि प्रेम में पूर्ण अधिकार के भाव की अभिव्यक्ति भी साहित्य में मिलती है, उदाहरण के लिए कबीर का यह दोहा देखें –

नैनां अन्तरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ।
ना हौं देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देउँ।।

ब्रजभाषा में 'मैं' के लिए 'हौं' का प्रयोग होता है, 'देखौं' मतलब है देखूँगा तथा 'देउँ', का अर्थ है 'दूँगा'। मीराँ के इस पद में यह भाव नहीं है। मीराँ के अन्य पदों में भी प्रायः यह भाव नहीं मिलता जैसा कि आपने देखा होगा, वे यह अधिकार अपने प्रियतम को ही देती हैं।

2. आपने ध्यान दिया होगा कि प्रस्तुत पद की अंतिम पंक्ति में दर्शन की अभिलाषा है। भक्ति और प्रेम में यह अभिलाषा निरंतर बनी रहती है। समूचे भक्ति साहित्य में ऐसी बहुत सी उक्तियाँ मिलती हैं।

3. इसी पंक्ति में मीराँ ने श्रीकृष्ण को पूर्व जन्म में दिए गए वचन का स्मरण कराया है। पूर्व जन्म के साथ का ज़िक्र बहुत से पदों में मिलता है, जिनमें से एक का संदर्भ आपको पिछले पद की टिप्पणी में दिया जा चुका है। यहाँ अगले जन्म में दर्शन देने के श्रीकृष्ण के वचन की याद दिलायी गई है।

4. अगर आप इस पद की पहली तीन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ेंगे तो आपके समक्ष यह स्पष्ट हो जाएगा कि इनमें लोक-प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया गया है, ये मुहावरे हैं – मोल लेना, ढोल बजा कर लेना, तराजू के तोल कर लेना।

पाठगत प्रश्न 4.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से उचित कथन पर सही का चिह्न (√) अंकित करते हुए दीजिए:

1. मीराँ का मानना है
   (क) जैसी उनकी मर्जी होगी, वे वैसे ही रहेंगी।
   (ख) कृष्ण के घर जाकर सामाजिक तौर-तरीकों का पालन करेंगी।
   (ग) कृष्ण की इच्छाओं के अनुरूप व्यवहार करेंगी।
   (घ) कृष्ण की बातों को सोच-विचार कर ही मानेंगी।
2. मीराँ श्रीकृष्ण पर अपना तन और जीवन न्योछावर करती हैं क्योंकि :
   (क) वे कृष्ण से प्रेम करती हैं।
   (ख) वे कृष्ण को वचन दे चुकी हैं।

टिप्पणी

(ग) उन्होंने कृष्ण को मोल ले लिया है।

(घ) उनका मन समाज से त्रस्त है।

3. मीराँ श्रीकृष्ण से दर्शन देने के लिए कहती हैं क्योंकि

   (क) अब जैसे कृष्ण चाहते हैं वे वैसे ही रहती हैं।

   (ख) अब वे कृष्ण को मोल ले चुकी हैं।

   (ग) वे मंदिर में उनके दर्शन नहीं कर पातीं।

   (घ) कृष्ण ने पिछले जन्म में उन्हें दर्शन देने का वचन दिया था।

4. मीराँ किस बात को डंके की चोट पर स्वीकार करती हैं?

5. कृष्ण के प्रति मीराँ का प्रेम किस प्रकार का है?

पद - 3

प्रसंग

सखी म्हारी नींद नसाणी हो।
पिय रो पंथ निहारत सब रैण बिहाणी हो।।टेक।।
सखियन सब मिल सीख दयां मन एक न माणी हो।
बिन देख्याँ कल ना पणाँ मण रोस णा ठाणी हो।
अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय बाणी हो।
अंतर वेदन बिरह री म्यारी पीड़ णा जाणी हो।
ज्यूँ चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो।।

प्रस्तुत पद में भी मीराँ ने विरह की वेदना को अभिव्यक्त किया है। विरहिणी की नींद उड़ जाना तथा प्रियतम के बिना किसी भाँति चैन न पड़ना – इस भाव को मीराँ ने अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि हे सखी, प्रियतम के वियोग में हमारी नींद जाती रही है, प्रियतम की राह देखते हुए सारी रात व्यतीत हो गई है। हालाँकि सारी सखियों ने मिलकर मुझे सीख दी थी, पर मेरे मन ने उनकी एक न मानी और मैंने कृष्ण से यह स्नेह संबंध जोड़ ही लिया। अब यह हालत है कि उन्हें देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता और बैचेनी भी जैसे मुझे अच्छी लगने लगी है। मेरा सारा शरीर अत्यंत दुबला और व्याकुल हो गया है तथा मेरे मुख पर सिर्फ प्रियतम का ही नाम है। मीराँ कहती हैं, हे सखी! मेरे विरह ने मुझे जो आंतरिक पीड़ा दी है, उस पीड़ा को कोई नहीं जान पाता। जैसे चातक बादल की ओर एक टक द ष्टि लगाए रहता है और मछली पानी के बिना नहीं रह पाती, तड़पती रहती है, ठीक उसी प्रकार मैं, अपने प्रियतम के लिए तड़पती हूँ। प्रिय के वियोग में मैं अत्यंत व्याकुल हो गई हूँ और इस व्याकुलता में मैं अपनी सुध-बुध भी खो बैठी हूँ।

टिप्पणी

1. प्रस्तुत पद में विरह-वेदना की आंतरिक अनुभूति को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है। आप जानते ही होंगे कि जब हमारा प्रिय व्यक्ति हमसे दूर होता है तो हमारा मन उससे मिलने के लिए कितना बेचैन होता है। इस बेचैनी की तीव्रता को ठीक-ठीक बयान कर पाना बहुत कठिन होता है। इस पद

में मीराँ ने विरह से त्रस्त व्यक्ति की मनोदशा का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है।

2. आइए, हम इस पद से भाव-साम्य रखने वाली इन पंक्तियों को देखें –

(क) *कबीर देखत दिन गया, निस भी देखत जाइ।*
विरहणि पिव पावै नहीं, जियरा तलपै माइ।। – **कबीर**

(ख) *बिनु जल मीन तलफ़ जस जीऊ।*
चातक भइउँ कहत 'पीउ–पीउ' – **जायसी**

(ग) *नैना भये अनाथ हमारे।*
वै हरि जज, हम मीन बापुरीं, कैसे जिवहिं निनारे।।
हम चातक चकोर स्यामघन, बदन-सुधा नित प्यारे।।
मधुबन बसत आस दरसन की, जोई नैन मग हारे।। – **सूरदास**

3. आप जानते हैं कि हमारे सामूहिक विश्वास आमतौर पर वैज्ञानिक या ऐतिहासिक होते हैं अथवा अनुभव के आधार पर बनते हैं। इन विश्वासों को हम सत्य का नाम देते हैं। लेकिन हमारे कुछ विश्वास तर्क या विज्ञान या अनुभव से परे भी होते हैं और हम उन्हें भी सत्य रूप में प्रस्तुत करते हैं (लेकिन यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक विश्वास सत्य ही हो। यद्यपि हमारे विश्वास सत्य पर ही आधारित होने चाहिए)। कविता में भी कुछ ऐसे विश्वास होते हैं जो वास्तविक रूप से सत्य न भी हों पर एक मान्यता के रूप में कायम हैं, इन्हें हम 'कवि-सत्य' कहते हैं। ऐसी ही एक मान्यता यह है कि चातक नामक पक्षी स्वाति नक्षत्र में बादलों से गिरने वाली बूँद को पीकर ही प्यास बुझाता है, अन्य किसी प्रकार के जल को ग्रहण नहीं करता, भले ही प्यास से उसके प्राण निकल जाएँ। इसीलिए, भक्ति और प्रेम की एकाग्रता तथा अनन्य भाव की अभिव्यक्ति के लिए कवियों को चातक-भाव सर्वाधिक उपयुक्त लगता है। भक्ति-काव्य में चातक-भाव की विशेष प्रतिष्ठा है। उदाहरण के लिए देखिए–

(क) *चातक होइ पुकारु पियासा।*
पीउ न पानि सेवाति की आसा – **जायसी**

(ख) *एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।*
एक राम घन स्याम हित, चातक तुलसीदास।। – **तुलसीदास**

4. प्रेम की पीड़ा आंतरिक पीड़ा है, इसे वही समझता है जिस पर गुज़रती है – यह भाव हिंदी कविता में तथा स्वयं मीराँ की कविता में खूब मिलता है। ऐसे ही भाव रखने वाली इन पंक्तियों को भी देखिए –

(क) *हेरी मैं तो दरद दिवाणी, मेरो दरद न जाणै कोई।*
घायल की गति घायल जाणै, कि जिण लाई होई।। – **मीराँबाई**

(ख) *चोट सताणी विरह की, सब तन जरजर होइ।*
मारण हारा जाणि है, कै जिहि लागी सोइ – **कबीर**

पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही {√} का चिह्न अंकित कीजिए:

1. मीराँ की रातों की नींद उड़ गई है क्योंकि,
   (क) उन्हें अपने परिवार से धमकियाँ मिल रही हैं।
   (ख) मीराँ का सारा शरीर दर्द से पीड़ित है।
   (ग) वे प्रियतम कृष्ण के वियोग में बेचैन रहती हैं।
   (घ) उनके मन में एक प्रकार का आंतरिक डर बैठ गया है।
2. भक्ति में चातक-भाव की प्रतिष्ठा इसलिए है, कि वह
   (क) सदैव ऊपर ईश्वर की तरफ़ देखता रहता है।
   (ख) स्वाति नक्षत्र में गिरने वाली बूँद के प्रति अनन्य भाव रखता है।
   (ग) बादलों के आने की प्रतीक्षा करता है।
   (घ) पानी की शुद्धता और पवित्रता का पूरा ध्यान रखता है।
3. मीराँ की आंतरिक पीड़ा का कारण क्या है?
4. इस पद में चातक और मछली किसके प्रतीक हैं?

4.3 भाव सौंदर्य

आपने मीराँबाई के पदों को पढ़ा, समझा और उनका आनंद लिया। इन पदों में मीराँ ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम और भक्ति का सुंदर निरूपण किया है। प्रियतम श्रीकृष्ण की बाँकी छवि उनके मन-मस्तिष्क में गहरे पैठ गई है – इतने गहरे कि वे अपने अस्तित्व के बोध को भी खो बैठी हैं। वे प्रेम की इस अनुभूति को इस प्रकार से सँजोए रखना चाहती हैं कि पूर्ण रूप से स्वयं को इस प्रेम के प्रति समर्पित कर देती हैं। जब वे समर्पित हैं, तो उनका उठना, बैठना, सोना, जागना, पहनना, ओढ़ना, खाना, पीना तथा मान, अपमान, राग, द्वेष सभी कुछ कृष्ण के लिए है, फिर चाहे लोक-अपवाद मिले या परिवार और राजसत्ता की ओर से यातनाएँ – वे अपने प्रेम की शक्ति से सबको परास्त कर देती हैं, किसी की चिंता नहीं करतीं। प्रेम के मिलन की पुलक, उत्साह और आनंद तथा विरह की पीड़ा, व्याकुलता और वेदना, सभी भावों की उन्होंने अत्यंत सहज, सुंदर और सटीक अभिव्यक्ति की है। व्यक्तिगत जीवन-अनुभवों से प्राप्त अनुभूति की तीव्रता उनके काव्य का निजी वैशिष्ट्य है, जो मध्यकालीन साहित्य में कम देखने को मिलता है। यद्यपि संत-काव्य में अनुभूति की गहनता

मिलती है पर वह कहीं-कहीं है, जब कि मीराँ के समूचे काव्य में अनुभूति की तीव्रता और सघनता पाई जाती है।

भक्ति काव्य में मीराँ एक अलग व्यक्तित्व की स्वामिनी है। उनके काव्य का अध्ययन करने वाले, उन्हें कभी संत काव्य की परंपरा में रखते हैं, कभी महाप्रभु वल्लभाचार्य की पुष्टिमार्गी परंपरा में। मीराँ में कभी चैतन्य महाप्रभु की माधुर्य भाव की भक्ति की परंपरा दिखाई देती है, तो कभी सूफी काव्य-परंपरा से भाव-साम्य भी देखा जा सकता है, पर सत्य यह है कि मीराँ इन सभी परंपराओं से अलग अपनी छाप छोड़ती है। पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में वैयक्तिक अनुभूतियों की ऐसी अभिव्यंजना वास्तव में अनूठी है। यह परंपरा आगे अधिक ठोस रूप में घनानंद तथा छायावाद के कवियों में ही मिलती है। इस रूप में मीराँ के काव्य को प्रव त्ति स्थापक (Trend Setter) भी माना जा सकता है।

4.4 शिल्प सौंदर्य

काव्य रूप की द ष्टि से मीराँ का काव्य गीतिकाव्य के अंतर्गत आता है। अनुभूति की तीव्रता और सघनता प्रायः गीतिकाव्य में ही व्यक्त होती है। गीतिकाव्य के आवश्यक तत्त्व हैं – भावानुभूति, वैयक्तिकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता तथा शैली की कोमलता।

पहले दो तत्त्वों पर हम विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। यही वे तत्त्व हैं जो गीत या गाने से गीति को अलग करते हैं। मीराँ के काव्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मीराँ ने संभवतः संगीत और न त्य की भी शिक्षा पायी थी पदावली में संग हीत उनके पद लगभग सत्तर भिन्न रागों में निबद्ध हैं। उन्हें 'पीलू राग' अत्यंत प्रिय है। यद्यपि कृष्ण भक्ति काव्य में प्रायः राग निबद्ध रचनाएँ मिलती हैं, पर मीराँ के काव्य में राग-रागनियों का विशेष महत्त्व है। आत्मानुभूति की प्रमुखता के कारण संक्षिप्तता उनके यहाँ सायास नहीं लाई जाती है, न ही वे किसी तरह खींच-खाँच कर आवश्यक पंक्तियाँ जुटाती हैं। उनका पद चार पंक्तियों में भी सिमट जाता है, तो कभी-कभी भावानुकूल विस्तार भी ग्रहण कर लेता है। उनकी शैली तो कोमल है ही। इस प्रकार वे गीतिकाव्य की सभी आवश्यकताओं का सुंदर निर्वाह करती हैं।

मीराँ ने न तो रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि तथा बिंब, प्रतीक, अप्रस्तुत योजना, अन्योक्ति आदि का चमत्कार प्रस्तुत किया है और न ही वे भाव तथा विचारगत शब्दावली के जाल में उलझती हैं। वे तो अत्यंत सहज ढंग से साधारण भाषा में अपने हृदय की बात रखती हैं, उनका शिल्पगत सौंदर्य उनकी भावानुभूति की तीव्रता से ही अपना आकार ग्रहण करता है। तथापि आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने मीराँ पदावली में पंद्रह प्रकार के छंदों तथा रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा अत्युक्ति, उदाहरण, विभावना, स्वभावोक्ति, अर्थांतरन्यास, श्लेष, वीप्सा आदि अलंकारों को रेखांकित किया है।

मीराँ की भाषा मूलतः ब्रजभाषा है, जिसमें राजस्थानी तथा गुजराती के शब्दों की प्रचुरता भी है। खड़ी बोली के पूर्व रूप को भी मीराँ के काव्य में यत्र-तत्र देखा जा सकता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

टिप्पणी

खड़ी बोली

1. पिव मेरा मैं पीव की

2. जोगी मत जा, मत जा, मत जा

3. ऐसे वर का क्या करूँ जो जनमे और मर जाय।

4. हँस कर निकट बुलावे

5. देश विदेश संदेश न पहुँचे।

6. सुरत की कछनी काछूँगी।

राजस्थानी – *'मेरी उणकी प्रीति पुराणी उण बिन पल न रहाऊँ।'*

ब्रजभाषा – *'पंक्तियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यो री न जाए।'*

पाठगत प्रश्न 4.4

1. मीराँ की काव्य रचना किस संप्रदाय से जुड़ी हुई थी–

   (क) ज्ञानमार्गी साधना
   (ख) सूफ़ी काव्यधारा
   (ग) वल्लभाचार्य का पुष्टि मार्ग
   (घ) उपर्युक्त में किसी से नहीं।

2. मीराँ की भाषा में अभाव है –

   (क) चित्रात्मकता का
   (ख) नाद सौंदर्य का
   (ग) क्लिष्टता का
   (घ) बिंब का।

3. मीराँ के भक्ति गीत समकालीन कवियों से किस अर्थ में भिन्न हैं?

4. काव्य रूप की द ष्टि से मीराँ के पद किसके अंतर्गत आते हैं?

4.5 आइए, स्वयं पढ़ें

मीराँ के गीतों का आनंद आपने लिया। आइए 'कबीर' के इस पद को भी पढ़ें:

दुलहनीं गावहु मंगलचार,
हमारे घरि आये हो राजा राम भरतार।
तन रति करि मैं, मन रति करिहूँ पंचतत बराती।
रामदेव मोरे पाहुनैं आये, मैं जोबन मैमाती।।
सरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा बेद उचार।
रामदेव संग भाँवरि लेहूँ, धनि धनि भाग हमार।।
सुर तैतीसूँ कौतिग आये, मुनियर सहस अठ्यासी।
कहै कबीर हमें ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी।।

शब्दार्थ

भरतार – पति
रति – प्रेम
पंचतत – पंच तत्व (प थ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश)
पाहुनैं – मेहमान
जोबन – यौवन
मैमाती – मद से भरा
उचार – उच्चारण
कौतिक – करोड़
मुनियर – मुनिवर
सहस > सहस्र – हजार
पुरिष – पुरुष
अबिनासी – जो सदा रहता है (ईश्वर)

पद को पढ़कर आप यह तो समझ गए होंगे कि इसमें किसी विवाह उत्सव की चर्चा है। कैसे? भरतार (पति) कौन है? उसे कैसा पुरुष कहा गया है? भक्त अपने आप को 'जोबन मदमाती' क्यों कह रहा है? इस बारात में बराती कौन है ? दूल्हा कौन है? वेदी किस की है? विवाह कराने वाला मुख्य वैदिक पुरोहित कौन है? भाँवर कौन ले रहा है? किन पंक्तियों से पता चला है कि इस विवाह में सभी देवता और मुनि भी पधारे हैं?

आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर तो ढूँढ़ लिए। पर क्या आप यह समझ पाए कि यह विवाह-मिलन वस्तुतः किस-किस के बीच है? यों सोचकर देखिए कि यह 'आत्मा' और 'परमात्मा' का मिलन है। इस संदर्भ में पूरे पद को एक बार और समझिए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

पाठगत प्रश्न 4.5

1. 'दुलहिनीं' संबोधन किसके लिए है –

   (क) गाँव की स्त्रियों के लिए
   (ख) आत्मा के लिए
   (ग) घर की नई बहू के लिए
   (घ) स्वयं कवि के लिए

2. पंचतत्त्वों से क्या तात्पर्य है ?
3. कवि अपने को भाग्यवान क्यों मानता है ?
4. किस पंक्ति से पता चलता है कि देवता और मुनि भी विवाह के अवसर पर पधारे थे?

4.6 आपने क्या सीखा

1. मीराँ का काव्य किसी बँधी-बँधाई काव्य परंपरा में नहीं आता।
2. मीराँ के पदों का वैशिष्ट्य उनकी तीव्र आत्मानुभूति में निहित है।
3. मीराँ के काव्य का विषय है – श्रीकृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम और भक्ति।
4. मीराँ ने प्रेम के मिलन (संयोग) तथा विरह (वियोग) दोनों पक्षों की सुंदर अभिव्यति की है।
5. श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम में मीराँ किसी भी प्रकार की बाधा या यातना से विकल नहीं होतीं। लोक का भय अथवा परिवार की प्रताड़ना दोनों का ही वे द ढ़ता के साथ सामना करती हैं।
6. गीतिकाव्य की द ष्टि से मीराँ के काव्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे इस क्षेत्र में मध्यकालीन काव्य में सबसे अलग दिखाई पड़ती हैं।
7. मीराँ की रचनाएँ विभिन्न राग-रागनियों पर आधारित हैं तथा उन्होंने अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है।

8. मीराँ की भाषा राजस्थानी और गुजराती मिश्रित ब्रज है तथा सरल अभिव्यक्ति उनकी शैली की प्रमुख विशेषता है।

4.7 योग्यता विस्तार

कवयित्री परिचय

मीराँ के काव्य का अध्ययन करते समय हमने देखा कि मीराँ ने अपने पदों में निजी जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति की है किंतु यह विचित्र संयोग है कि न तो मीराँ के काव्य से उनके जन्म, जीवन-काल और माता, पिता, पति आदि के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी मिलती है और न ही किसी अन्य स्रोत से। उपलब्ध जानकारियों के अनुसार पंद्रहवीं या सोलहवीं शती में जन्मी मीराँ का मायका मेड़ता में था तथा ससुराल मेवाड़ के प्रसिद्ध राजवंश में। ऐसा कहा जाता है कि बचपन में ही माता ने श्री गिरधर की मूर्ति को उनका पति बता दिया था, तभी से मीराँ श्रीकृष्ण को अपना पति मानने लगीं और उनके विवाह के बाद भी यह क्रम चलता रहा। मीराँ निर्भीक, साहसी और द ढ़ विचारों वाली थीं। स्वयं द्वारा चुने गए मार्ग और विचारों की सत्यता के प्रति आश्वस्त मीराँ समस्त विघ्न और बाधाओं का डटकर सामना करती थीं। उन्हें जीवन में कभी भी हताशा या निराशा नहीं हुई।

यद्यपि मीराँ द्वारा रचित कई काव्य-कृतियों का उल्लेख किया जाता है, पर उनके जीवन-व त्त की भाँति मीराँबाई की पदावली में संग हीत पदों के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। यूँ मीराँ की पदावली का संपादन कई लोगों ने किया है, पर आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'मीराँबाई की पदावली' सर्वाधिक प्रामाणिक संग्रह है। इसकी भूमिका में आचार्य जी ने मीराँ के जीवन तथा उनके काव्य पर भी विस्तार से विचार प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त नरोत्तम स्वामी की पुस्तक 'मीराँ मंदाकिनी' भी उल्लेखनीय है। मीराँबाई के जीवन और उनके काव्य पर विचार तथा विश्लेषण की द ष्टि से बंगीय हिंदी परिषद् द्वारा प्रकाशित 'मीराँ स्म ति ग्रंथ' का भी विशेष महत्त्व है। मीराँ के काव्य की उत्कृष्टता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि उनके पद हिंदी भाषी प्रदेशों के अतिरिक्त गुजरात, बंगाल तथा उड़ीसा आदि प्रांतों में भी अत्यंत श्रद्धा के साथ गाए जाते हैं।

4.8 पाठांत प्रश्न

1. मीराँ की भक्ति-भावना पर टिप्पणी कीजिए।
2. मीराँ के पदों में गेयता (संगीतात्मकता) है, सिद्ध कीजिए।
3. क्या मीराँ की रचनाओं को किसी संप्रदाय से जोड़ना उचित है ?
4. मीराँ की भाषा की विशेषताएँ उदाहरण देकर बताइए।
5. निम्नलिखित की संप्रसंग व्याख्या कीजिए—

   (क) माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।

थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लिया बजन्ता ढोल।
थे कह्यो मुंहाघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल।
तण वारा म्हाँ जीवण वीराँ, वाराँ अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

(ख) सखी म्हारी नींद नसाणी हो।
पिय रो पंथ निहारत सब रैण बिहाणी हो।।टेक।।
सखियन सब मिल सीख दयां मण एक णा मानी हो।
बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मण रोस णा ठानी हो।
अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय बाणी हो।
अंतर वेदन बिरह री म्हारी पीड़ णा जाणी हो।
ज्यूँ चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो।।

6. निम्नलिखित पद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस रितु हम पर जब से स्याम सिधारे।।
अंजन थिर न रहत अँखियन में, कर कपोल भये कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।।

(क) गोपियों के हाथ और गाल काले क्यों हो जाते हैं ?

(ख) गोपियाँ रात-दिन क्यों रोती हैं ?

(ग) 'उर बिच बहत पनारे' से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं ?

(घ) 'सदा पावस रितु रहने' से क्या आशय है ?

4.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. (क) 2. (ग) 3. अपने आपको, 4. रात में

4.2 1. (ग) 2. (क) 3. (घ), 4. कृष्ण से अपने प्रेम संबंध को
5. समर्पण भाव की माधुर्य भक्ति

4.3 1. (ग) 2. (ख) 3. कृष्ण से वियोग 4. मीराँबाई का

4.4 1. (घ) 2. (घ) 3. माधुर्य भक्ति, समर्पण भाव गीत पारंपरिक नहीं है 4. गति काव्य

4.5 1. (क) 2. प थ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश 3. राम को अपने सर्वस्व (पति) रूप में पाकर 4. सुर तैतीसूं ....